

प्रेस विज्ञप्ति

**जामिया मिल्लिया इस्लामिया में “फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के बीच सामाजिक-भाषाई संबंध”
पर दो दिवसीय इंटरनेशनल सेमिनार आयोजित**

नई दिल्ली, 24 नवंबर, 2025

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (JMI) के पर्शियन डिपार्टमेंट ने दारा शिकोह रिसर्च फाउंडेशन और नेशनल काउंसिल फॉर द प्रमोशन ऑफ सिंधी लैंग्वेज के साथ भागीदारी में, 19-20 नवंबर, 2025 को “फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के बीच सामाजिक-भाषाई संबंध” पर दो दिवसीय इंटरनेशनल सेमिनार सफलतापूर्वक आयोजित किया। सेमिनार का उद्घाटन सत्र यूनिवर्सिटी के FTK CIT कॉन्फ्रेंस हॉल में हुआ, जिसकी अध्यक्षता माननीय वाइस चांसलर, प्रोफेसर मजहर आसिफ़ ने की। भारत सरकार की पूर्व विदेश और सांस्कृतिक मामलों की राज्य मंत्री, सुश्री मीनाक्षी लेखी इस मौके पर मुख्य अतिथि के तौर पर मौजूद रहीं, जबकि नई दिल्ली में ईरान कल्चर हाउस में कल्चरल काउंसलर, डॉ. फरीदुद्दीन फरीद असर विशिष्ट अतिथि थे। कीनोट एड्रेस दिल्ली यूनिवर्सिटी में इंडियन लैंग्वेजेज और लिटरेरी स्टडीज डिपार्टमेंट के प्रेसिडेंट प्रोफेसर रवि प्रकाश टेकचंदानी ने दिया।

प्रोफेसर मजहर आसिफ़ ने फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के बीच कनेक्शन पर बात करते हुए, यूनिवर्सिटी के करिकुलम में और भी भारतीय भाषाओं को शामिल करने का अपना कमिटमेंट बताया। उन्होंने कहा कि इस एरिया में कुछ तरक्की हुई है, लेकिन और कोशिशों की ज़रूरत है। फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के बारे में बात करते हुए, सुश्री मीनाक्षी लेखी ने पूरी तरह से ज्ञान हासिल करने की अहमियत पर ज़ोर दिया। उन्होंने कहा, उन्होंने कहा, “मैंने फ़ारसी और अरबी की भी पढ़ाई की है। ज्ञान दूसरों को दिखाने के लिए नहीं, बल्कि अपने चरित्र को बेहतर बनाने के लिए लिया जाता है।”

अपने कीनोट एड्रेस में, प्रोफेसर रवि टेकचंदानी ने सिंध की जियोग्राफी, इलाके में इस्तेमाल होने वाली भाषा, इसके आर्किटेक्चर और सूफी परंपराओं का ओवरव्यू दिया, साथ ही सिंधी स्क्रिप्ट और ब्रिटिश कॉलोनिअल ताकतों से जुड़े मुश्किल पॉलिटिकल डायनामिक्स के बारे में भी विस्तार से बताया।

डॉ. फरीदुद्दीन फरीद असर ने फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के महत्व पर ज़ोर दिया और कहा कि सिंध का बॉर्डर ईरान से लगता है, जिससे दोनों इलाकों के बीच लंबे समय से गहरा रिश्ता बना हुआ है।

मानविकी एवं भाषा संकाय के डीन, प्रोफेसर इक्तिदार मोहम्मद खान ने जामिया और सिंध के बीच गहरे रिश्तों पर ज़ोर देते हुए याद किया कि कैसे मौलाना अब्दुल्लाह सिंधी, जो यूनिवर्सिटी के फाउंडिंग मेंबर थे, इसकी गवर्निंग बॉडी के लाइफटाइम मेंबर थे। उन्होंने आगे बताया कि जामिया में एक हॉस्टल का नाम उनके सम्मान में रखा गया था।

मेहमानों का स्वागत फूलों, शॉल और कीपशेक्स से किया गया। फ़ारसी डिपार्टमेंट के अध्यक्ष और सेमिनार के डायरेक्टर प्रोफेसर सैयद कलीम असगर ने मेहमानों का शुक्रिया अदा किया। सेमिनार के कन्वीनर डॉ. मोहसिन अली, यूनिवर्सिटी की दूसरी फैकल्टी के डीन, विभागों के अध्यक्ष, अलग-अलग विषय के प्रोफेसर, फैकल्टी मेंबर और जेएनयू और दिल्ली यूनिवर्सिटी के छात्रों के साथ-साथ जामिया के बड़ी संख्या में छात्र मौजूद थे।

दूसरे दिन, 20 नवंबर, 2025 को हुए समापन सत्र में डॉ. पुष्कर मिश्रा मुख्य अतिथि थे। अपने भाषण में, उन्होंने पाणिनि और भर्तृहरि जैसे पुराने विद्वानों का जिक्र करके फ़ारसी और संस्कृत के बीच के कनेक्शन पर ज़ोर दिया, साथ ही अवेस्ता और संस्कृत परंपराओं के बीच के संबंधों का भी जिक्र किया। उन्होंने भाषा बनाने के चार मुख्य तरीकों पर बात की, जिसमें बोलने के विजुअलाइज़ेशन और एक्सप्रेशन शामिल हैं। इसके अलावा, उन्होंने ग्लोबल नॉलेज प्रोडक्शन के लिए भारतीय नॉलेज सिस्टम के महत्व को बताया। डॉ. मिश्रा ने अलग-अलग डोमेन में प्रोडक्शन के सेंटर के तौर पर भारतीय सबकॉन्टिनेंट के महत्व पर ज़ोर दिया।

विशिष्ट अतिथि, प्रो. रविकांत मिश्रा ने सिंध के ज्योग्राफिकल, कल्चरल और भाषाई इलाके की पहचान करके मिडिल एज के भारत में फ़ारसी पहचान और कल्चर को बनाए रखने की अहमियत पर ज़ोर दिया। उन्होंने लोकल भाषाओं, यानी ब्रज और अवधी जैसी लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं की अहमियत पर भी ज़ोर दिया। इसके अलावा, उन्होंने भारत में मिडिल एज के दौरान "इंडियन फ़ारसी" के उदय पर भी चर्चा की। उनके भाषण में रीजनल और लोकल कल्चर के ऐतिहासिक उभार और विकास पर भी फ़ोकस था।

प्रो. अनवर खैरी ने फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के अलग-अलग शब्दों और टर्म्स के बीच एक जैसी बातें बताईं। प्रो. इक्तिदार मोहम्मद खान ने अलग-अलग रास्तों से इस्लाम के आने के अलग-अलग फेज़ पर बात की, जिसमें ट्रेड, कॉमर्स और दूसरे कनेक्शन पर फोकस किया गया। उन्होंने यह भी कहा कि भारतीय मुसलमान अरबों से सिर्फ़ धर्म से जुड़े हैं, न कि सभ्यता और कल्चर से। असल में, भारत में मुसलमान कल्चर और भाषा के हिसाब से भारतीय हैं। डॉ. मोहसिन अली ने पूरी कॉन्फ्रेंस के बारे में आखिरी बातें कहीं, जिसमें फ़ारसी और सिंधी भाषाओं के बीच सोशियो-लिंग्विस्टिक रिश्ते से जुड़े अलग-अलग थीम पर पेश किए गए कई पेपर्स पर ज़ोर दिया गया। उन्होंने कॉन्फ्रेंस में हिस्सा लेने वाले सभी पार्टिसिपेंट्स का दिल से शुक्रिया भी अदा किया।

प्रो. कलीम असगर ने कॉन्फ्रेंस में आए खास मेहमानों का दिल से स्वागत किया और उनका शुक्रिया अदा किया। उन्होंने सभी आए हुए लोगों के लिए खूबसूरत दोहे सुनकर समापन सत्र खत्म किया। इसके अलावा, उन्होंने पार्टिसिपेंट्स, आए हुए लोगों और वॉलंटियर्स को धन्यवाद दिया।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी